International Journal of Applied and Universal Research **E-ISSN No: 2395-0269**
Volume III, Issue V, Sept-Oct. 2016 Available online at: www.ijaur.com

''महात्मा गांधी के चितंन की दिशा और दृष्टि''

डॉ. किशन यादव
एसो. प्रोफेसर
राजनीति विज्ञानविभाग व शोध केन्द्र
बुन्देलखण्ड कॉलेज झांसी (उ.प्र.)

सारांश :– भारतीय समाज की कुछ पीढ़ियॉ जब समाप्त हो जाएगी और साहित्य में जब गांधीजी और उनके कार्यों के बारे में पढ़ा जाएगा तो वे एकाएक तो इस बात पर विश्वास ही नहीं करेंगे कि कभी इतना महान व्यक्ति इस धरती पर जन्मा था, किसी न किसी तरह वह यह चिंतन भी कर सकता है कि क्या इस युग में इस प्रकार की कोई हस्ती जन्म ले सकती है। देखा जाए तो गाँधी जी की प्रार्थना सभाएं किसी मंदिर में न होकर खुले आकाश के नीचे होती थीं,और उन्हो ने हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, और बौद्ध धर्म ग्रन्थों के पाठ इनमें भामिल करके इन्हें धार्मिक सामांजस्य का प्रतीक बना दिया। गाँधी जी का सामाजिक चिन्तन और उनका समाज सुधार नीति पर लगाए गए तमाम आरोंपों के बावजूद भी ये स्पष्ट होता है कि महात्मा गाँधी जी ने भारत में दलित चेतना को जागृत करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होने अपने समय की सम्पूर्ण जनमानस की चेतना को आंदोलित किया। जनशक्ति उनका प्रमुख हथियार था, और इसी व्यापक जन" ाक्ति के प्रति विश्वास ने दलितों के भीतर चेतना उत्पन्न की। गाँधी जी ने अपने दर्शन का मुख्य आधार सत्य और अहिंसा को बनाया और इसी को उन्होंने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सामाजिक, राजनैतिक, आर्थिक और नैतिक रूप में लागू किया। उन्हे इस बात पर विश्वास था कि इस आधार पर प्रतिस्थापित राज्य एक ऐसा राज्य होगा जिसमे न्याय, प्रेम और अहिंसा का वर्चस्व रहेगा। जिसमें कोई राजा नही होगा क`वल जनता का भासन होगा।

मुख्य शब्द :– महात्मागाँधी, वैचारिकचिंतन, अहिंसा, जनमानस, चेतना, दलित, पापी, संत।

प्रस्तावना :–

भारतीय समाज की कुछ पीढ़ियॉ जब समाप्त हो जाएगी और साहित्य में जब गांधीजी और उनके कार्यों के बारे में पढ़ा जाएगा तो वे एकाएक तो इस बात पर विश्वास ही नहीं करेंगे कि कभी इतना महान व्यक्ति इस धरती पर जन्मा था, किसी न किसी तरह वह यह चिंतन भी कर सकता है कि क्या इस युग में इस प्रकार की कोई हस्ती जन्म ले सकती है। वास्तव में गांधी के मुकाबले का कोई आदमी अब पैदा होगा, यह विश्वास ही नहीं होता, उन्हें किंवदंती कहा जा सकता है यह आश्चर्यजनक बात है कि गांधीवादी चिंतन में सबसे अधिक जगह मिली थी अहिंसा को और आज हिंसा ने उसकी जगह ले ली। हिंसा का रोग भारत ही नहीं विश्व स्तर पर व्याप्त हो गया है। अनेक बार और हाल ही के ताजा महीनों में विश्व में हिंसा की समाप्ति के लिए प्रयास हों, इसके लिए बड़े बड़े सम्मेलन हुए हैं। गांधीजी ने जब देश को आजादी दिलाने की बात की तो उनकी रूपरेखा में सबसे अधिक महत्व दिया गया था अहिंसा को वह तो कहत थे कि अहिंसा के बल पर आजादी हासिल करनी है, देखिए, कितने बड़े आश्चर्य की बात है कि जिस गांधीवादी उपकरण चरखे को हमने बुला दिया है उसने गांधीजी को आजादी की लड़ाई अहिंसा के रास्त लड़ने की सबसे बड़ी प्रेरणा दी थी। एक बार एक विदेशी सेवाग्राम में उनके पास आया था और दुनिया के हालात उसे पूछे तो गांधीजी का यह जवाब था कि हम तो आजादी की लड़ाई इस चरखे के बल पर लड़ रहे हैं और उसे हासिल करके ही रहेंगे। कभी कभी हमें यह सोचने को विवश होना पड़ता है कि गांधी ने समाज, देश और अपने निजी जीवन के कल्याण के लिए उन माध्यमों को कैसे चुना जिनका लोग जानते ही नहीं, चाहे वह चरखा ही क्यों न हो, वर्ष 1988 में जन्म एक पत्रकार थे फेन्नर बाकवे, वह दूसरी गोलमेज परिषद में गांधी जी से अंतिम बार मिले थे, लंदन से ज न्यू लीडर अखबार निकलता था वह उसके संपादक थे, जब ब्रिटिश सरकार ने अपनी भारतीय शाखा के द्वारा इंडिया नामक पत्र भारत से निकाला तब वह उसके अंतिम संयुक्त संपादक हैं इन्हीं फेन्नर बाकवे हैं, का वार्तालाप गांधी जी से हुआ था, तब तक एक प्रश्न के जवाब में गांधी जी ने कहा था कि मैं, भारतीय स्वाधीनता संग्राम की जिम्मेदारियों से ुक्त होकर संसार के अहिंसा आंदोलन से जुड़ना चाहता हूँ आशय यह कि अहिंसा के लिए एक चिंता गांधीजी को तब भी रही है, गांधी ने तो हिटलर द्वारा की जा रही हिंसा का मुकाबला करने के लिए भी अहिंसा के अस्त्र का प्रयोग करने की ही सलाह दी थी, वास्तव में हिंसा से गांधी जी बहुत ज्यादा ही विचलित हो जाते थे और यह स्वाभाविक ही है, क्योंकि भारत में जिन महापुरूषों की शिक्षा और दर्शन का प्रभाव गांधीजी पर जन्मजात पड़ा था यहाँ तक कि विदेशी तक गांधीजी की इस मानसिकता को महत्व देते थे, 14 अप्रैल, 1940 में ही जार्ज केंटलिन ने कह दिया था कि गांधीजी के संपर्क में आने पर मैंने यह अनुभव किया कि ईसा के गिरि प्रवचन और भगवान कृष्ण की भगवदगीता का समन्वय करने एवं उसे अपने व्यावहारिक और राजनैतिक जीवन में उतारने के लिए वह प्रयासशील है, आज अहिंसा के लिए किसी तरह के मानदंण्ड निर्धारण, की जरूरत ही नहीं है, वह तो गांधीवादी तरीके से ही अमल में लाई जा सकती है।

इसमें दो मत नहीं है कि देश की आजादी हो या समाज सुधार, अनुसूचित जाति की समस्या होया अस्पृश्यता निवारण, विश्व शांति हो या राजनैतिक मामले गांधीजी का चिंतन अपनी एक अलग ही दिशा और दृष्टि रखता है परन्तु गांधीजी ने अपनी जिस सिद्धांतवादिता का पालन स्वयं किया उसकी उम्मीद वह अन्यों से भी करते थे, यह कहने में कोई अतिश्योक्ति नहीं है कि जन्म से ही वह अहिंसा के पोषक रहे

हैं जब उन्होंने अपना जन्म दिन एक बार मनाया तब भी दुनिया में हिंसा का ज्वार उमड़ा हुआ था उनकी इच्छा थी किवह 125 वर्ष जिए हैं किन्तु हिंसा ने उन्हें इतना उद्वेलित कर दिया था कि वह अंतिम जन्मदिन ही मना सके थे। मीरा बहन ने उनके इस जन्मदिन की पूरी तैयारियाँ की थीं। उस समय गांधीजी ने एक वाक्य कहा था कि मैं समझता हूँ कि अब मैं, अपना अगला जन्म दिन न मनाऊँ, गांधीवादी चिंतन का भी यह एक तरीका कहा जा सकता है गांधीजी हिंसा से जितने उद्वेलित हुए थे उतने शायद वह ब्रिटिशों की जिद के सामने भी नहीं हुए।

उनके ये विचार किन्ने समीचीन लगते हैं कि अहिंसा को जब उसकी बुनियादी बातों से दूर रखा जाता है, और किसी तरह की शेखों या घमंड की भावना न रखकर अत्यंत नम्र भाव से तथा किसी के प्रति मन में शत्रुभाव न रखकर उसका पालन किया जाता है तब वह प्रकृति की रोग निवारण प्रक्रिया की तरह अदृश्य परन्तु महाभूतों की तरह प्रचंड सर्वव्यापक और अजेय बन जाती है।

आज विश्व के सामने जितने भी जटिल काम हैं उनमें हिंसा का समाधान सबसे पहले किया जाना चाहिए यह तो भारतीय संस्कारों का ही अवदान कहा जाएगा कि उसने समय समय पर ऐसे महापुरूषों को जन्म दिया, जिन गांधीजी को हम दुनिया की एक बड़ी और चलती फिरती ताकत मानते आ रहे हैं उनके जीवन के बुनियादी सिद्धांतों को सबसे पहले अपने जीवन में उतारने की आवश्यकता है, सदियों से ही अहिंसा परमो धर्मः का सूत्र हम निरंतर दोहराते आ रहे हैं। उसका परिपालन तो गांधी जी द्वारा किया ही गया इसे अत्याधिक महत्व देने के बाद और तेजी से अमल में लाया जाना चाहिए, वास्तव में जीवन का धर्म ही अहिंसा है। विश्व के देश इस बात से इंकार नहीं करते कि जो पाठ भारतीय महापुरूषों ने अहिंसा को लेकर पढ़ाया उसका ही महत्व आज है। परंतु आश्चर्य है कि इसे जीवन में उतारने को कोई तैयार नहीं होता। गांधीजी का जो सत्याग्रह का सिद्धांत था, उसमें भी अहिंसा ही सबसे आगे रखी गई थी इसके बल पर ही एक हाड़ मांस के पुतले ने विश्व में जो इतिहास रचा उसे न केवल आज वरन सदियों तक दोहराया जाना है। आज जब विश्व में किसी देश में हिंसा को पढ़ते हैं तो उद्वेलित हो उठते हैं ऐसे समय गांधीजी की स्मृति आना स्वाभाविक ही है परन्तु आज जब गांधी जी हमारे बीच नहीं है तो गांधी जी के इस पुख्ता सिद्धांत को हमें ही प्रचारित करने का बीड़ा उठाना होगा।

गांधी जी का कहना था कि मुझे नहीं लगता कि हवा में बहुत अहिंसा है परन्तु अहिंसक आचारण भी कानून को अपना काम करने से नहीं रोक सकता। किसी भी हालत में पीड़ित, पक्ष की ओर से अहिंसक आचरण नहीं हो सकता। जब तक कि अपराधी अपने अपराधों को प्रकट नहीं कर दे और उनके लिए पश्चात नहीं करे।

गांधीवादी चिंतन की जो धारा हम देखते हैं उससे यही ध्वनित होता है कि गांधीजी की सोच और दर्शन नितांत मौलिक रहे हैं उनके लिए तर्क की गुंजाइश ही नहीं होती थी, लोग यह कह सकते हैं कि हर समय शांति का तरीका ही अमल में लाना कठिन है तो फिर तरीका कौन सा हो सकता है कि हम अपनी और दुनिया की समस्याओं को सुलझाने में सफल हों, हमारे पास इसका जवाब हो ही नहीं सकता विश्व में अब न तो ईसा जन्म ले सकते हैं और न बुध या महावीर और न गांधी उनके बताए मार्ग से ही अहिंसा को फैलाया जा सकता है। एक सूत्र वाक्य इसी बात को आगे बढ़ाता है कि इतिहास इस बात का गवाह है कि अपनी भीतरी कषायों के कारण मनुष्य ने कितने बड़ेऋबडे जुल्म किए और वह भी मानवता पर क्या यह बापू जी को जीते हुए कर पाना संभव नहीं है कि हम भारत में सबसे पहले उनके अहिंसा के सिद्धांतों को पुनः स्थापित करें, लोक अहिंसा के सिद्धांतों पुनः स्थापित करें, लोक जीवन की यह बहुत बड़ी जरूरत है, गांधीजी ने अगर चरखे और अहिंसा के बल पर आजादी। लाने का अपना मंतव्य व्यक्त कर उसे कर दिखाया तो आज की दुनिया यह सब क्यों नहीं कर सकती, अगर हम चाहें तो गांधीवादी मार्ग पर चालकर पुनः दुनिया के गुरू हो सकते हैं। यह कितना बड़ा आश्चर्य है कि भारत में जन्मे एक महापुरूष ने अपने साथ आए लाखों लोगों के मन में अहिंसा का जो बीज बोया। वह वृक्षबनकर सारे विश्व में चला गया दक्षिण अफ्रीका के नेल्सन मंडेला शायद गांधीजी के बाद दुनिया के सामने सबसे बड़ी और ताजा मिसाल है जिन्होंने गांधीवादी तरीके से ही अपने देश को आजाद किया उनकी लंबी जेल यात्रा का स्मरण हमें निश्चय ही अपने देश की आजादी के संग्राम के दिनों की याद दिला सकता है। बापू के अहिंसा संबंधी चिंतन की धारा को आज स्वीकार करने की ही जरूरत शेष रह गई है।

इस सम्पूर्ण वातावरण से जब गांधी जी के सिद्धांतों और आदर्शों को अपनाने का आग्रह किया जाता है तो कुछ मदान्य आलोचक और भौतिकवादी सभ्यता का अभ्यस्त मनुष्य उन्हें अव्यवहारिक कहकर अपना पीछा छुड़ाना चाहता है। किन्तु यह एक बड़ी भूल है, इसमें सुधार अपेक्षित है। गांधी जी के जीवनकाल में उसके सभी सिद्धांत व्यवहारिक हुए। सापेक्ष सत्य और न्यूनातिन्यून हिंसा की स्थिति को स्वीकार करके उन्होंने देश को नवनिर्माण की ज्योति प्रदान की। उनके पश्चात् उनके विचारों को अव्यवहारिक कहकर छोड़ देना तो किसी भी रूप में उपयुक्त नहीं हो सकता। आज ऐसा विरोधाभास समाज में समा गया है कि बुराई और पतनोन्मुख ले जाने वाले कार्यों को व्यवहारिक कहा जाता है जब कि सात्विक और उच्च मनोभावों से अनुप्रेरित कार्यों को अव्यवहारिक कहकर छोड़ने का आग्रह होता है। वस्तुतः गांधी जी के सिद्धांत व्यवहारिक है किन्तु समाज ही उन्हें व्यवहारिक बनाने की क्षमता अनुभव नहीं करता है।

आज विश्व में पुनः तनाव की स्थिति है। राष्ट्रीय जीवन में असन्तुलनजनित आक्रोश उभर रहा है। ऐसे में समय की इच्छा और मांग यह है कि गांधी जी के दिखाये हुए मार्ग पर चला जाये। इस देश में सत्य और अहिंसा की बातों पर महात्मा जी ने इतना जोर दिया, नैतिकता को इतना ऊँचा उठाया कि इससे स्वराज्य मिला। विदेश के लोग हमारी ओर आशा लगाये हुए हैं और देख रहे हैं कि शायद उन्हें इस देश से कोई ऐसी बात मिल जाये कि उनकी भविष्य की विपत्ति हट सके। विश्व के सम्मुख जनतंत्र प्रतिरक्षा और विकास के

प्रश्न प्रमुख है इसके लिए गांधी जी का पथ ही प्रगति और संतोष दे सकता है।

जहाँ तक भारत का सम्बन्ध है वह भौतिकता के साथ गठबंधन करके अपनी आत्मा को जीवित नहीं रख सकता। उसे तो विश्व में अनुकरणीय बनना है। उसे गांधी जी का मर्ग ही वह गौरव प्रदान करा सकता है। सम्पूर्ण मानवता के हित भी तभी सुरक्षित रह सकते हैं जब कि सब सात्विक मन से उनके आदर्शों को अंगीकृत कर लें, अहिंसा को कायरता न समझें और सादगी के मन से उनके आदर्शों को अंगीकृत कर लें, अहिंसा को कायरता न समझें यह देखकर सभी को संतोषानुभूति है कि गांधी जी के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी विनोवा जी द्वारा संचालित सर्वोदय आन्दोलन इस दिशा में प्रयत्नशील है। सर्वोदय में गांधी जी की सभी सात्विक मान्यताओं को समा लिया गया है। विश्वास है कि इस आन्दोलन से गांधी जी का स्वर अधिक स्पष्ट रूप से मुखरित होगा, वास्तविक कल्याण उस स्वर के साथ संधि करने में ही है।

निष्कर्ष

निष्कर्ष ये है कि सत्य, अहिंसा के पुजारी महात्मा गाँधी के सम्पूर्ण वैचारिक चिंतन की प्रासांगिकता आज भी है, प्रश्न ये है कि हम उसे कैसे आ ैर किस रूप में लेते है ं। आज के इस भूमंडलीकरण, ग्लोबाइजे" ान की दौड़ती दूनिया में गाँधी जी के विचारों को कितने आगे ले जा पायेंगे, और अगर ले गए तो सचमुच मेरा भारत महान ही नही उसकी छवि विश्व में हमेशा के लिए महान हो जाएगी।

संदर्भ ग्रंथ

1. रामनाथ सुमन–गांधीवाद की रूपरेखा, साधना सदन दिल्ली
2. इन्द्र विद्यावाचस्पति– भारतीय स्वाधीनता संग्राम का इतिहास
3. ईश्वरी प्रसाद–भारतीय मध्य युग का इतिहास, इण्डिय प्रेस इलाहाबाद
4. गौरीशंकर भट्ट– भारतीय संस्कृति, साहित्य भवन, देहरादून
5. गुरूमुख निहाल सिंह– भारत का वैधानिक एवं राष्ट्रीय विकास